रात्री क्लास ओमशान्ति 1-10-67

बाप और बच्चों का मिलन, बाप को भी मीठा लगता है, बच्चों को भी मीठा लगता है। किसको जास्ती मीठा लगता है? (बच्चों को) नहीं। बाप को। अच्छा उनको लगता है। बाबा तो जानते हैं सारे विश्व को हेविन बनाना है। वह तो है ही निश्चय बुधि। आये हैं विश्व को स्वर्ग बनाना ही है। बच्चे भूल जाते हैं इस कारण सर्विस ठीक नहीं चलती। बाप का तो आत्माओं पर लव है। बाकि चाहिए मददगार। मददगारों में ही रोला पड़ता है। स्वर्ग तो बन ही जावेगा ड्रामा प्लेन अनुसार। बाकि बच्चों को हिम्मत कर ऊंचा मिजाज हर्षित बनना है। बच्चे दैवी गुण नहीं धारण कर सकते हैं। बाप को भूल जाते हैं। भूलना न चाहिए। जिससे बेहद का वर्सा मिलता है उनको भूलना न चाहिए। बाबा ने बहुत बार समझाया है याद में कोई तकलिफ नहीं। और रोज की मुरली भी जरूर सुननी है। कोई डेट की मुरली तो मिस नहीं की। बहुत बच्चे आते-जाते हैं जो बीच की मुरली रह जाती है। ध्यान नहीं देते। कोई समझते हमने तो समझ लिया है। बाप युक्ति बतलाते ही हैं धारणा कर सर्विस में लग जाओ। मुख्य बात है बाप को याद करने की। तुम जानते हो कि पुरुषोत्तम बनने बाप के पास आते हैं। बाप कितना ऊंच पढ़ाते हैं तो कितना उल्लास रहना चाहिए। यह (ल० ना०) लेकर परिक्रमा करो। भारत ऐसा श्रेष्टाचारी था अब नहीं है। हम फिर से श्रेष्टाचारी बनाते हैं। भारत स्वर्ग था अब कंगाल कैसे बना है यह कोई नहीं जानते। बाप समझाते हैं सब पुजारी हैं। तमोप्रधान दुनिया में कोई भी पवित्र हो न सके। बाकि सब है भक्ति मार्ग के अन्धश्रधा। भारत अन्धश्रधा में नामीग्रामी है। कुछ भी नहीं समझते। अभी तुम समझते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार स्वच्छ बन रहे हैं। भारत को महादानी कहा जाता है। बाप अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। वह तुम देते रहो। एक मत हो सर्विस को बढ़ाते रहो। तुम बच्चों में यह ज्ञान है दुनिया तो जैसे अन्धी है। ऐसे नहीं कहेंगे कि नवधा भक्ति से सा० हुआ नहीं। हिम्मत की तो सा० हुआ। तुम भी ऐसे न हिम्मत से पुरुषार्थ करेंगे तो बाप कहते हैं मुझे याद करेंगे तो ऐसा बनेंगे। पुरुषार्थ से ऐसा बनना है। आशीर्वाद कृपा आदि यह अक्षर भक्ति मार्ग के हैं। बाप कहते हैं तुम सब चिल्ड्रेन्स हो। कहते हैं तुमको इतने पैसे दिये तुम सब क्लास कर दिया। बेहद का बाप सब कहते हैं तुम डबल सिरताज थे फिर क्या हुआ? बाप ने समझाया है वन्डर भी खाते हो। डबल सिरताज बन हम नीचे उतरते2 क्या हो गये। इसको कहा जाता है उत्थान और पतन। बाप पहले जो समझा था वह ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझेंगे। 84 जन्म सब थोड़ेही लेंगे। कोई होशियार बैठ एवरेज हिसाब निकाल सकते हैं। परन्तु यह माथा मारना फालतू है। इससे तो बाप को याद करने में माथा मारना चाहिए। पेट भरेगा याद से। खुदाई खिदमतगार तो तुम बच्चे हो। बाप सब को लिखते हैं याद की यात्रा से बेरा पार। तुम इस पार से उस पार चले जावेंगे। जितना याद करते हैं घड़ी2 नजदीक आते जाते हैं। विलायत से लौटते हैं तो याद आता है हम जा रहे हैं। तुम भी दिन प्रति दिन नजदीक आते जाते हो। यह यात्रा तुम अभी करते हो। जाने की यात्रा है। यात्रा से विकर्म विनाश होते हैं। पावन होकर जाते हैं फिर 84 जन्मों के बाद फिर ऐसे हो जाते हैं। यह रूहानी यात्रा है। गीत भी है थक मत जाना हे रात के राही। रात को तो यात्रा करते नहीं है। फिर यह गीत क्यों बना है। बाप कहते हैं तुम अथक हो पुरुषार्थ करते रहो। जितना पुरुषार्थ करेंगे कल्याण होगा। बच्चों को अब समझ में आया है। बाप की भी समझ इमर्ज हुई है। संकल्प उठता तब है जब ड्रामा में पार्ट है। बाप कहते हैं कुछ हुआ वह हुआ कल्प पहले मुआफिक समझाता रहता हूं। यह अति सहज भी है पुरुषार्थ करते2 माया की जीत भी हो जाती है। माया ग्राह रूप कर लेती है, रूप किया है, रूप करेगी। न पढ़े हुये हो तो कोई हर्जा नहीं है यह तो समझने की बात है। पापात्माओं को दान देने से पाप लग जाता है। इसलिए बाप सब युक्तियां बतलाते रहते हैं। शिव बाबा को याद कर भोजन खाना है। सबु बाप को बतलाये दी तो सेपानिमवलटो से छूट जायेंगे। बाप तो डैरेक्शन देते हैं। यह ही है श्रीमत। बच्चों को अति इन्द्रिय खुशी होना चाहिए हम भगवान के बच्चे हैं। भगवान हमको पढ़ाते हैं। याद जरूर करना पड़े तब विकर्म विनाश हो। बहुत खुशी होगी भोले बाप को याद करेंगे तो पावन बन विश्व के मालिक बन जावेंगे। याद से खुशी बहुत होगी। ओम।